पद ५५ (अष्टक)

भक्तपालका दैन्य नाशका। पापहारका जगन्नायका। अनंतकोटि ब्रह्मांड नायका। नुपेक्षी मला दत्तमाणिका।।१।। अजामीळ पापिहि तारिला। द्रौपदी गजेंद्रासी धांवला। नरहरी मिषें स्तम्भि प्रगटला। कां उपेक्षिसी माणिका मला।।२।। अत्रिमुनि तपा करि सुदारुणा। दाविलें तया प्रेमकर्षणा। दत्त होउनी देसि दर्शना। कां उपेक्षिसि व्यर्थ या दीना ।।३।। ऐक्यतागुणें स्तवन ऐकतां । म्हणसि हे तिघे एक तत्त्वता। तीच मानिली शीघ्र पुत्रता। कां उपक्षिसी माणिका आतां।।४।। प्रगटसी तिथें दत्त होउनि। भक्त तारिले भक्ति लावुनी। भक्त आर्ति तु दवडिसी झणीं। माणिका तुझा दास हा गणी।।५।। नगरपीठ श्रीमती सतिकुशीं। स्वामि श्रीपाद तूंचि प्रगटसी। रजक मूर्धाभिषिक्त करविसी। माणिका मला कां उपेक्षिसी।।६।। नगर करंजीं अंबिका कुशीं। नरेंद्र भारती तूंचि प्रगटसी। द्विजज जाहला प्रतिबृहस्पति । मजिस माणिका कां उपेक्षिसी ।।७।। मनोहरात्मजा कल्याणकारका। प्रगटिसी स्वयें दत्त माणिका। बहुत तारिले पदरज:कणीं। रक्षि मनोहरा रूप दावुनी।।८।।